

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली  
सैकण्डरी स्कूल सटीकिकेट परीक्षा (कक्षा दसवीं)  
परीक्षार्थी प्रवेश-पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : HINDI COURSE - B

085

विषय कोड Subject Code :

परीक्षा का दिन एवं तिथि

Day & Date of the Examination : TUESDAY, 08.03.2016

उत्तर देने का माध्यम

Medium of answering the paper : HINDI

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे

कोड को लिखें :

Write code No. as written on  
the top of the question paper :

4/2/3

Set Number  
① ② ③ ④

अधिकारित उत्तर-पुरितका (ओ) की संख्या

No. of supplementary answer -book(s) used

N.I.L

विकलांग व्यक्ति : हाँ / नहीं  
Person with Disabilities : Yes / No

No

किसी शारीरिक अवस्था से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं।  
If physically challenged, tick the category

B  D  H  S  C  A

B = द्रुष्टिदीन, D = मूँह व बचिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक  
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक  
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged  
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन - लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं  
Whether writer provided : Yes / No

No

यदि इंटिलीन हैं तो उपयोग में लाए गये  
सोफ्टवेर का नाम : N.A.  
If Visually challenged, name of software used :

\*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रखा छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का  
नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।

Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the  
name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

7814839

085/12271/15702

कार्यालय उपयोग के लिए  
Space for office use

खंड - घा

४. (क)

श्युक्रिन एक सुनार था। एक कुले ने उसकी ऊँगली को लेवजह कर्कि खाई थी। अतः वह एक हफ्ते तक अपना पैचीदा किसी को नहीं कर पाएगा और उसका नुकसान होगा। इसलिए वह उस कुले के मालिक से मुआजवा पाना चाहता था।

(ख)

लेखक की माँ बनस्पति और जीव-जगत का बहुत आदर करती थीं। और वे कहती थीं कि दिन छुपने के बाद पेंडों से पत्ते तोड़ने से वे रोते हैं। रात में फूल तोड़ने से वे श्राप देते हैं। वे कबूतर को हज़रत महम्मद की अज़ीज़ मन्त्री थीं और मुर्गों के प्रति भी सम्मान प्रकट करती थीं। वे समुद्र को सलाम करके उसे खुश करने के लिए कहती थीं।

(ग)

जापानियों के दिमाग में की रफ़तार घटार युना तेज़ होने के कारण ऐसा लेखक ने कहा है।

जापान में चाय पीने की विधि को टी-शेसनी या 'चा-नो-यू' कहा जाता है, जिसमें चाय एक-एक बूँद करके पी जाती है। इस तरह शांत तात्त्वरण में चाय पीने से फिल्म की रफ्तार दीरे-बीरे दीमी पड़ती चली जाती है। कुछ समय बाद लिंगुल बंद भी हो जाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो व्यक्ति अनंतकाल में जी रहा हो। उसे सन्नाटा भी सुनाई देने देता है। उसके फिल्म में भूत और भविष्य दोनों काल उड़ जाते हैं, और वह केवल वर्तमानकाल में जीता है जो अनंतकाल जैसा विस्तृत मालूम होता है।

(10.)

(क) व्यवहारिक उन्हें कहा जाता है जो आदर्श के व्यावहारिक बनाकर जीवन में अपनाते हैं। वे हमेशा सजग रहते हैं क्योंकि वे दूसरों से आगे बढ़ना चाहते हैं और सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। वे लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं।

(ख.)

स्वयं ऊपर चढ़ना और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलना ही महत्व की बात मानी जाती है, क्योंकि इसी से समाज की उन्नति होती है, और प्रोपकार की मानना स्पष्ट इच्छकती है।

(ग) आदर्शवादी लोगों ने इत्यं ऊपर चढ़कर अपने साथ कई दूसरों को भी ऊपर ले चला है। इस प्रकार वे समाज में शाश्वत मूलयों की स्थापना भी करते हैं।

11. (क) कवि ने कहा है कि प्राण छोड़ते समय सैनिकों की साँस जमती गई और नसें जमती गईं, फिर भी उन्होंने बढ़ते कदम को नहीं रोका। उनके सिर कटते गए, मगर उन्होंने हिमालय का सिर झुकने नहीं दिया। वे देश के लिए अपनी अंतिम साँस तक कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करते रहे।

(ख) भौं पूरे वर परिवार में नायक-नायिका दृश्यारोऍ के माध्यम से बात करते हैं। सबकी उपस्थिति में नायक ने नायिका को दृश्यारा किया। नायिका ने दृश्यारे से मना किया। इस पर नायक रीझ कर गया। इस रीझ पर नायिका खीझ उठी। दोनों के जोत मिले, नायक प्रसन्न था और नायिका की आँखों में लहजा थी।

(ग) आकाश व में चमकते तारों को स्नेहीन कहा गया है वर्णोंकि उनके आपस में कोई स्नेह नहीं है, और वे प्रभु-भक्ति से शून्य हैं (आश्चर्यहीन क्षिप्ति और बिना तेल के दीपक के समान)

12. 'मधुर - मधुर मेरे दीपक जल !' आद्यात्मिक कविता है जिसमें दीपक प्रभु - शक्ति की लोगों का प्रतीक है।

कवयित्री चाहती है कि उसके मन में आस्था - रूपी दीपक निरंतर जलना रहे - मधुर माव से, पुलक झाव से, कंपते हुए, हँसी - खशी से । वह चाहती है कि उसका जीवन प्रभु के काम आए । वह प्रभु के मर्म पर दीपक - क्षी बनकर जलती रहे । वह अपनी शुग्रय से सभी दिशाओं को सहकारी रहे । शारी दुनिया में प्रभु शक्ति की अधरी चाह है । सांसारिक लोभ और तृष्णा के कारण लोगों के हृदय जल रहे हैं । उन्हें शांति चाहिए, शक्ति चाहिए । कवयित्री अपनी अपने तन को गलाकर, अपना अहं मात त्यागकर, अपने प्रियतम को प्राप्त करना चाहती है । वह अपनी शक्ति - शावना से सारे जगत के आँगन को महकाना चाहती है ।

अपने बल पौर्स द्वारा

13. कवि ने ऐसा इश्वरिय कहा है क्योंकि व श्वर्तन रूप से जीवन की कठिनाइयों को पार करने में सफल होना चाहता है; और एक सहायक पर निर्भर नहीं होना चाहता ।

इस कविता में कवि श्वर्य अपने बल पर अपने दूषों पर ताण पाना चाहता है । वह कष्टों से छुटकारा नहीं, बल्कि उन्हें सहने की शक्ति चाहता है के लिए प्रार्थना करता है । वह चाहता है कि इस शंसार के लोगों द्वारा धोखा थाने के पश्चात भी वह मन में हार न जावे । वह कभी भी परस्मात्मा के प्रति

संशय न करें। वह सुख के समय में ईश्वर को शाद करें और उनके प्रति विनय प्रकट करें। उसका बल पौरुष कशी न है, वह नहीं अड़ि निर होकर संकटों का सामना करें, और ईश्वर के प्रति उसकी आस्था सदा - सर्वदा बनी रहे।

उंड - रु

3.(i)

जब शब्द व्याकरणिक नियमों में बदलकर वाक्य में प्रयुक्त होता है, तब उसे पद कहते हैं।

उदा.

सेब → शब्द  
राम सेब खाता है। (यहाँ 'सेब' एक पद बन जाता है।)

(ii)

शब्द → एक या अधिक वार्गों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक शब्द।  
पद → वाक्य में प्रयुक्त शब्द छोड़ को पद कहते हैं।

4.(i)

जैसे ही रशम ने अमुना तट पर मुख्ली बजाई, वैसे ही शरि जाएं  
इकट्ठी हो गई।

ii)

वे वहाँ यार और ट्रिकेट का मैच देखने लगे।

iii)

सारल लाल

5.(a)

\* सृष्टु (मध्यु) है जो वचन - कर्मिधारय समास

\* फैह का फैन - तत्पुरुष समास

(b)

\* प्रकृतिवर्णन - तत्पुरुष समास

\* गोरक्षण - कर्मिधारय समास

6. (क) हमने उससे कहा दिया था +

(ख) तुम अपना पक्ष रखो। ✓

(ग) हमारे दोनों लड़के इसी शहर में रहते हैं।

(घ) आप हमारे घर के कब आएंगे?

\* वह इस दुलाज के लिए हाँ कहते हुए अपने प्राण हथेली पर रखा रहा है।

\* मैं प्रतियोगिता जीत गई, इसलिए वी के दिये जलाओ

खंड - ८

14. मरीकुा शोबन,  
अ.व.स. विद्यालय,  
नई दिल्ली।

दिनांक: ४ मार्च, 2016

मरीकुा शोबन,  
डाक केंद्र कार्यालय,  
नई दिल्ली।

विषय: डाक पहुँचाने की अव्यवस्था।

माननीय महोदय,  
सूचनार्थ जिवेदन है कि मैं च.ड.ट. क्षेत्र का निवासी हूँ। बात एक माह से हमारे इलाके में डाक वितरण अनियमित रूप से चल रहा है। इसका प्रमुख कारण है इस क्षेत्र के पोस्टमैन की लापरवाही। वह नियमित रूप से डाक नहीं पहुँचाता और आम्हे कारने पर हमें बुरा - भला सुनाता है।

इश्के कारण यहाँ के निवासियों को अनेक अविंश्चितियाओं का सामना करना पड़ रहा है।

आपसे विनाश निवेदन है कि कृपया इस समस्या को सुलझाने का प्रयास करें और पोष्टर्सेन को नियमों का पालन ताकि भविष्य में हमें संकरों का सामना न करना पड़े।

संधन-योगी  
भवदीय,  
क. ब. ग

15. (श) जीवन में श्रम की महत्ता

मनुष्य सदृश प्राणि - पश्च पर अगे बढ़ना चाहता है। इसके लिए जीवन में एक अति - महत्त्वपूर्ण अंग की आवश्यकता है:- श्रम। हम श्रम से ही सफलता प्राप्त कर सकते हैं। श्रम के विभिन्न रूप हैं। कुछ लोग मानविक श्रम करते हैं, जिससे वे बुद्धि का विकास करते हैं। अन्य लोग परिश्रम करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केवल एक ही मूल मंत्र - परिश्रम। कठोर साधना के पश्चात ही महान लोग प्रसिद्ध हुए हैं। इससे अनुशासन और अप्रयास भी जुड़े हुए हैं। श्रम के महत्व को समझते हुए हमें भी अपार श्रम करना चाहिए।

16.

सूचना  
अ.ब.स. समिति  
शोग की कक्षाएँ

४ मार्च 2016

इस मुहले के निवासियों को सूचित किया जा रहा है कि निवासियों के लिए शोग की कक्षाएँ प्रारंभ की जा रही हैं :-

स्थान : मध्यर पार्क

समय : सुबह ७ बजे से १० बजे तक

ट्रॉलक : निःशुल्क

दिनांक : प्रति शुक्रवार और रविवार

कृपया हन कक्षाओं का लाभ उठाएं ताकि आप सदा स्वस्थ रहें।

झ. न. झ.

सचिव

अ.ब.स. समिति

राम : क्या तुमने सुना ? कल दिल्ली में एक क्रूझ हुआ था।

श्याम : हाँ। यह धरना विद्यार्थियों द्वारा आयोजित किया गया था।

राम : आजकल हड़ताल - धरने लगते अधिक बढ़ गए हैं।

श्याम : ठीक कहा।

राम : लोगों को अपनी माँगों पुरी करने के लिए सरकार को विश्व  
कर देते हैं।

श्याम : यह अच्छी बात ही तो है। लोग अपने अधिकारों के प्रति सजगा  
हैं।

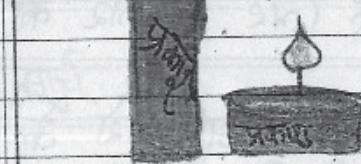
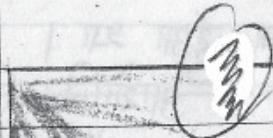
राम : परंतु इससे उनशांति भाग हो जाती है।

श्याम : बिलकुल सही।

राम : हमें शान्तिपूर्वक अपना प्रस्ताव सरकार के सामने रखना चाहिए।

श्याम : और एक संतुष्ट और शांत जीवन जीना चाहिए।

18.



सिफी ₹२०

यह देता है आपको प्रकाश,  
आप इससे न होंगी निराश !

आज ही अरीदिरा प्रकाश मोमबन्तियाँ

→ विभिन्न रंगों और आकारों में उपलब्ध  
→ विभिन्न सुंगाय - सहित

आज ही छारीदिरा !

## ठोड़ - क

- (क) हर मौसम का अपना मिजाज, अपना अंदाज, अपनी खुशबू, अपना श्वरी होता है, जो हमें तरह तरह की भावनाओं, अनुभूतियों से भरकर हमारे अनुभव - जगत का विस्तार करता है। हम इन प्रकृति के रूपों, अर्थात् नृत्यों को निःशब्द हर उसे निहारने लगते हैं। इसका हम पर मनोवैज्ञानिक असर भी होता है।
- (ख) धन्ते बसंत नृत्य में: फूलों से आकृ आवृत कर शिलशिला हट से भर देना। वर्षा नृत्य में: इर इर पानी बरसाकर तर कर देना। ये दो अनुरूप मुद्रे अधिक प्रशावित करते हैं।
- (ग) ग्रीष्म के अलसाए दिन लंबे होने के कारण, ठंडे बंद कमरों में लेटे दिलो - दिमाग को आत्मचिंतन का खुब समय देते हैं (मनोवैज्ञानिक प्रभाव)। ठंडसे लेणक प्रशावित होता है।
- (घ) मध्यमास हमारी एक महीना है जहाँ जिसमें बसंत नृत्य का अनुभव किया जाता है। मध्यमास हमारी रचनात्मक प्रवृत्ति को तरश्च देता है और हमें तरह - तरह से रचनात्मक करता है।

(उ.) सुख और दुःख में से एक भी दशा स्थायी नहीं है,  
उतः हमें न सुख में अधिक सुखी और न दशा में अधिक  
दुखी होना चाहिए; वर्तमान से जीना चाहिए।

(च) प्रकृति के विभिन्न समसोहक कोणों को देखते ही हम चकित और  
प्रभावित हो जाते हैं, हम उस सौदर्य को द्वारा से  
वर्णन नहीं कर सकते, और हम उसे निटारते रहते हैं।

2. (क) 'होनों' दो लिङ्कियाँ हैं और वे बहुत छोटी और सामूली चीजें जैसे  
गाय, दूष देती हैं, और इसे शुश्राव है, वे इनके बारे में  
बातचीत कर रही हैं।

(ख) क्योंकि वे शादी के बाद वे अपने समुराल के बर चली जाएँगी। मान-  
पिता इन्हें एक भार के समान मानते हैं।

(ग) कवि कहता है कि यदि हँड़वा ने बेटियों (स्त्रीओं की रक्षा की है, तो  
उनके मान-सम्मान एवं सुरक्षा की व्यवस्था भी समाज के लिए  
प्रढान करें।

(v) असरकूा, समाज में नारी को बराबर अधिकार नहीं दिए जाते;  
 विद्यालय जाने से पांचव (नारियों के लिए) ~~पांचव~~

समाज में पुरुष और स्त्री दोनों को समान बराबर मानना चाहिए।  
 उनके बीच लिंग के आधार पर साविजनिक स्थलों और परिवार के  
 अंदर किसी प्रकार का अद्वेदशाव नहीं करना चाहिए।

